Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 6.247 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 9 | SEPTEMBER 2026

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में मानसिक एकांत और महानगरीय जीवन

बबीतारानी [1]

[1] **(सहायक प्रोफेसर), मानविकी विभाग, महर्षिमारकंडेश्वर (डीम्डटूबी यूनिवर्सिटी), मुलाना, अंबाला हरियाणा, इंडिया.**

ABSTRACT:

आधुनिक हिंदी साहित्य में महानगरीय जीवन आधुनिक मनुष्य की बदलती सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक स्थितियों को अभिव्यक्त करने वाला महत्वपूर्ण विषय बनकर उभरा है। महानगर व्यक्ति को रोजगार, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, आधुनिक सुविधाएँ और व्यक्तिगत विकास के अनेक अवसर प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ ही तीव्र प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दबाव, समयाभाव, प्रवासन, उपभोक्तावाद और संबंधों में बढ़ती दूरी जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं। इन परिस्थितियों का सीधा प्रभाव व्यक्ति के मानसिक संसार पर पड़ता है और वह भीड़ में रहते हुए भी अकेलेपन तथा भावनात्मकता का अनुभव करने लगता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र मेंआधुनिक हिंदी उपन्यासों में मानसिक एकांत और महानगरीय जीवन' के अंतर्संबंध का विश्लेषण किया गया है। मानसिक एकांत को केवल शारीरिक अकेलेपन के रूप में न देखकर भावनात्मक दूरी, संवादहीनता, आत्मसंघर्ष, असुरक्षा और अस्तित्वगत बेचैनी के रूप में समझने का प्रयास किया गया है।आधुनिक हिंदी उपन्यासों के पात्रों में महानगरीय परिवेश के कारण उत्पन्न मानसिक तनाव, पारिवारिक विघटन, दांपत्य संबंधों का संकट, प्रवासन और पहचान की समस्या विशेष रूप से दिखाई देती है।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि महानगरीय जीवन में स्त्री का मानसिक एकांत अलग प्रकार की जटिलताओं से जुड़ा है। रोजगार, स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की आकांक्षा के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक अपेक्षाएँ उसके मानसिक संघर्ष को बढ़ाती हैं। इसी प्रकार उपभोक्तावादी संस्कृति और डिजिटल संचार ने आधुनिक अकेलेपन के स्वरूप को बदल दिया है।

आधुनिक हिंदी उपन्यासकारों ने आत्मसंवाद, स्मृति, अंतर्मन, चेतना-प्रवाह और संवादहीनता जैसी शिल्पगत प्रविधियों के माध्यम से मानसिक एकांत को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। निष्कर्षतः महानगरीय मानसिक एकांत केवल व्यक्तिगत परेशानी नहीं, बल्कि आधुनिक सामाजिक संरचना और बदलते मानवीय संबंधों से जुड़ा व्यापक प्रश्न है।

KEYWORDS:

आधुनिक हिंदी उपन्यास, महानगरीय जीवन, मानसिक एकांत, अकेलापन, आधुनिकता, उपभोक्तावाद, प्रवासन, अस्तित्व-बोध ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
19th September 2026	20th September 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.22857395	https://zenodo.org/records/22857395

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी का मनुष्य तीव्र सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण और सूचना-प्रौद्योगिकी के विस्तार ने मनुष्य के जीवन को पहले की अपेक्षा अधिक गतिशील और सुविधासंपन्न बनाया है। विशेष रूप से महानगर आधुनिक जीवन के विकास और परिवर्तन के प्रमुख केंद्र बनकर उभरे हैं। महानगर व्यक्ति को शिक्षा, रोजगार, आर्थिक उन्नति, स्वतंत्रता और अपनी पहचान निर्मित करने के अनेक अवसर प्रदान करता है। किंतु इन उपलब्धियों के समानांतर महानगरीय जीवन व्यक्ति के भीतर तनाव, असुरक्षा, प्रतिस्पर्धा, संबंधों में दूरी और मानसिक एकांत की स्थितियों को भी जन्म देता है। इसीलिए आधुनिक महानगर का सबसे बड़ा विरोधाभास यह दिखाई देता है कि व्यक्ति हजारों-लाखों लोगों के बीच रहते हुए भी भावनात्मक और मानसिक स्तर पर अकेला अनुभव कर सकता है ।

हिंदी साहित्य ने अपने आरंभ से ही सामाजिक परिवर्तन और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी है। बदलते हुए समय के साथ हिंदी उपन्यास का कथ्य भी परिवर्तित हुआ है। प्रेमचंद के समय का ग्रामीण और सामाजिक यथार्थ धीरे-धीरे आधुनिक, नगरीय, मध्यवर्गीय और मनोवैज्ञानिक यथार्थ की ओर विकसित हुआ। आधुनिकहिंदी उपन्यास में महानगरीय जीवन केवल कथा की पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह पात्रों के व्यक्तित्व, संबंधों, आकांक्षाओं और मानसिक अवस्थाओं को प्रभावित करने वाली सक्रिय शक्ति के रूप में उपस्थित है। महानगर की सड़कों, बाजारों, कार्यालयों, बहुमंजिला इमारतों, यातायात और तकनीकी सुविधाओं के पीछे एक ऐसा मनुष्य दिखाई देता है जो अपने अस्तित्व, संबंधों और पहचान को लेकर अनेक प्रश्नों से जूझ रहा है।

मानसिक एकांत का संबंध केवल शारीरिक अकेलेपन से नहीं है। व्यक्ति परिवार, मित्रों और सहकर्मियों के बीच रहते हुए भी स्वयं को अकेला अनुभव कर सकता है। जब व्यक्ति अपनी अनुभूतियों, इच्छाओं, पीड़ाओं और विचारों को दूसरों के साथ साझा नहीं कर पाता, तब उसके भीतर भावनात्मक दूरी और मानसिक रिक्तता का निर्माण होता है। महानगरीय जीवन में समय का अभाव, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, नौकरी का दबाव, पारिवारिक संरचना में परिवर्तन और व्यक्तिवादी जीवन-दृष्टि इस स्थिति को और जटिल बना देते हैं। परिणामस्वरूप आधुनिक मनुष्य के सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि भौतिक सुविधाओं और सामाजिक संपर्कों की अधिकता के बावजूद उसके भीतर अकेलापन क्यों बढ़ रहा है।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में इस मानसिक एकांत को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्ति मिली है। कहीं यह दांपत्य संबंधों में उत्पन्न संवादहीनता के रूप में सामने आता है, कहीं परिवार के विघटन के कारण, तो कहीं प्रवासन और विस्थापन के अनुभव से। महानगर में आने वाला

व्यक्ति अपने साथ अपने अतीत, स्मृतियों, सांस्कृतिक मूल्यों और पारिवारिक संबंधों को लेकर आता है। नए परिवेश में स्थापित होने की प्रक्रिया में उसे अपनी पुरानी पहचान और नई जीवन-शैली के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। इस संघर्ष से उत्पन्न मानसिक स्थितिआधुनिक उपन्यासों के पात्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

महानगरीय जीवन में स्त्री का अनुभव भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। शिक्षा और रोजगार के माध्यम से स्त्री की सामाजिक स्वतंत्रता बढ़ी है, किंतु उसके सामने परिवार, कार्यस्थल और सामाजिक अपेक्षाओं का दोहरा दबाव बना हुआ है।आधुनिक हिंदी उपन्यासों में कामकाजी और स्वतंत्र स्त्री के सामने उपस्थित अकेलेपन, आत्मनिर्णय, संबंधों और अस्मिता के प्रश्नों को गंभीरता से उठाया गया है। इसी प्रकार युवा वर्ग भी महानगरीय जीवन की प्रतिस्पर्धा, करियर की अनिश्चितता और संबंधों के बदलते स्वरूप के कारण मानसिक तनाव का अनुभव करता है।

उपभोक्तावादी संस्कृति भी मानसिक एकांत को समझने का महत्वपूर्ण आधार है। महानगर में सफलता को प्रायः आर्थिक उपलब्धियों, भौतिक वस्तुओं और सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता है। व्यक्ति अधिक सुविधाएँ प्राप्त करने की निरंतर दौड़ में अपने भावनात्मक संबंधों और आत्मिक आवश्यकताओं से दूर होता जाता है। इस प्रकार भौतिक समृद्धि के बीच मानसिक रिक्तता आधुनिक महानगरीय जीवन का एक प्रमुख विरोधाभास बन जाती है।

समकालीन डिजिटल युग ने इस स्थिति को और जटिल किया है। मोबाइल, सोशल मीडिया और इंटरनेट ने संचार के साधनों को अत्यंत व्यापक बना दिया है, किंतु डिजिटल संपर्क हमेशा आत्मीय संबंध में परिवर्तित नहीं होता। व्यक्ति लगातार ऑनलाइन जुड़ा हुआ दिखाई देता है, फिर भी उसके भीतर संवादहीनता और अकेलेपन की अनुभूति बनी रह सकती है। इस प्रकार महानगरीय मानसिक एकांत अब केवल भौतिक परिवेश का परिणाम नहीं, बल्कि डिजिटल जीवन-शैली से भी जुड़ता जा रहा है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्यआधुनिक हिंदी उपन्यासों में महानगरीय जीवन और मानसिक एकांत के अंतर्संबंध का अध्ययन करना है। इसमें यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि महानगरीय परिवेश व्यक्ति के मनोविज्ञान, पारिवारिक संबंधों, प्रेम, दांपत्य, सामाजिक पहचान और अस्तित्व-बोध को किस प्रकार प्रभावित करता है। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि समकालीन हिंदी उपन्यासकारों ने मानसिक एकांत को व्यक्त करने के लिए अंतर्मन, स्मृति, आत्मसंवाद, चेतना-प्रवाह, प्रतीक और संवादहीनता जैसी शिल्पगत प्रविधियों का किस प्रकार प्रयोग किया है। इस दृष्टि से यह विषय साहित्य के साथ-साथ मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन और नगरीय अध्ययन से भी जुड़ता है। अतःआधुनिक हिंदी उपन्यासों में मानसिक एकांत और महानगरीय जीवन'आधुनिक मनुष्य की बदलती संवेदना, संबंधों और अस्तित्वगत संकट को समझने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक अध्ययन-विषय है।

मानसिक एकांत: अवधारणा

मानसिक एकांत आधुनिक मनुष्य की एक जटिल मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्थिति है। सामान्यतः एकांत का अर्थ व्यक्ति का दूसरों से शारीरिक रूप से अलग होना माना जाता है, किंतु मानसिक एकांत इससे भिन्न है। इसमें व्यक्ति लोगों के बीच रहते हुए भी स्वयं को भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक स्तर पर अकेला अनुभव करता है। उसके भीतर अपनी भावनाओं, इच्छाओं, चिंताओं और अनुभवों को साझा न कर पाने की स्थिति उत्पन्न होती है। परिणामस्वरूप वह संवादहीनता, असुरक्षा, आत्मसंघर्ष और भावनात्मक रिक्तता का अनुभव करने लगता है।

आधुनिक महानगरीय जीवन में मानसिक एकांत की समस्या अधिक दिखाई देती है। तेज जीवन-गति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, नौकरी का दबाव, प्रवासन, परमाणु परिवार, बदलते पारिवारिक संबंध और उपभोक्तावादी जीवन-दृष्टि व्यक्ति को आत्मीय संबंधों से दूर कर सकती है। डिजिटल माध्यमों ने संपर्क के अवसर बढ़ाए हैं, फिर भी वास्तविक भावनात्मक निकटता की कमी बनी रह सकती है।

साहित्य में मानसिक एकांत व्यक्ति के अंतर्मन, स्मृतियों, आत्मसंवाद, मौन, असुरक्षा और संबंधों के तनाव के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। समकालीन हिंदी उपन्यासों में यह आधुनिक मनुष्य के अस्तित्वगत संकट और पहचान की खोज से जुड़ा महत्वपूर्ण विमर्श है। अतः मानसिक एकांत को केवल व्यक्तिगत अकेलेपन के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक सामाजिक संरचना और बदलते मानवीय संबंधों की परिणति के रूप में समझना अधिक उचित है।

महानगरीय जीवन और व्यक्ति

महानगरीय जीवन आधुनिक सभ्यता और विकास की महत्वपूर्ण पहचान है। महानगर व्यक्ति को शिक्षा, रोजगार, आर्थिक उन्नति, स्वतंत्रता और आधुनिक सुविधाओं के अनेक अवसर प्रदान करता है। यहाँ विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और संस्कृतियों से आए लोग एक साथ रहते हैं, जिससे व्यक्ति के अनुभव और दृष्टिकोण का विस्तार होता है। महानगर व्यक्ति को पारंपरिक सामाजिक बंधनों से बाहर निकलकर अपनी पहचान निर्मित करने का अवसर भी देता है।

किन्तु महानगरीय जीवन का दूसरा पक्ष तनाव और असुरक्षा से जुड़ा है। तेज जीवन-गति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, नौकरी का दबाव, महँगाई, यातायात, समयाभाव और उपभोक्तावादी संस्कृति व्यक्ति के मानसिक संसार को प्रभावित करते हैं। महानगर में सामाजिक संपर्क बहुत अधिक होने के बावजूद आत्मीय संबंधों का अभाव दिखाई दे सकता है। व्यक्ति परिवार और मित्रों से दूर होकर अपने व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने के संघर्ष में मानसिक थकान अनुभव करता है।

महानगरीय जीवन ने पारंपरिक संयुक्त परिवार की संरचना को भी प्रभावित किया है। परमाणु परिवार, प्रवासन और बदलती जीवन-शैली के कारण व्यक्ति के सामाजिक संबंधों का स्वरूप परिवर्तित हुआ है। परिणामतः स्वतंत्रता के साथ अकेलापन भी बढ़ा है।

आधुनिकहिंदी उपन्यासों में महानगरीय व्यक्ति इसी द्वंद्व का प्रतिनिधि है। वह विकास और स्वतंत्रता चाहता है, लेकिन साथ ही पहचान, आत्मीयता और मानसिक शांति की तलाश में भी रहता है। इस प्रकार महानगर व्यक्ति के लिए अवसर और मानसिक संघर्ष—दोनों का केंद्र है।

महानगर: अवसर और अकेलेपन का द्वंद्व

महानगर आधुनिक मनुष्य के जीवन में अवसर और संकट दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। एक ओर महानगर व्यक्ति को शिक्षा, रोजगार, आर्थिक उन्नति, आधुनिक सुविधाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के व्यापक अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर यही परिवेश उसके भीतर अकेलेपन, असुरक्षा और मानसिक तनाव को जन्म दे सकता है। छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों से महानगर में आने वाला व्यक्ति बेहतर भविष्य और जीवन-स्तर की आकांक्षा लेकर आता है। यहाँ उसे अपनी प्रतिभा और योग्यता के आधार पर आगे बढ़ने की संभावनाएँ मिलती हैं।

किन्तु महानगरीय जीवन की तेज गति व्यक्ति को निरंतर प्रतिस्पर्धा में बनाए रखती है। नौकरी का दबाव, आर्थिक आवश्यकताएँ, समयाभाव और सामाजिक प्रतिष्ठा की आकांक्षा उसके जीवन को व्यस्त बना देती हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति के पास आत्मीय संबंधों और भावनात्मक संवाद के लिए पर्याप्त समय नहीं रह जाता। हजारों लोगों के बीच रहते हुए भी वह स्वयं को अकेला महसूस कर सकता है।

महानगर में व्यक्तिवाद व्यक्ति को स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति देता है, लेकिन यही व्यक्तिवाद कभी-कभी सामाजिक और पारिवारिक दूरी का कारण भी बनता है। प्रवासन के कारण व्यक्ति अपनी जड़ों और परिचित सामाजिक परिवेश से दूर हो जाता है, जिससे स्मृति और वर्तमान के बीच तनाव उत्पन्न होता है।

इस प्रकार महानगर आधुनिक व्यक्ति के लिएउन्नति और एकांत, स्वतंत्रता और असुरक्षा तथा भीड़ और अकेलेपनका जटिल द्वंद्व प्रस्तुत करता है। यही द्वंद्वआधुनिक हिंदी उपन्यासों में आधुनिक जीवन की महत्वपूर्ण संवेदना बनकर उभरता है।

पारिवारिक विघटन और मानसिक एकांत

महानगरीय जीवन ने परिवार की संरचना को भी प्रभावित किया है। संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों का विस्तार हुआ है। पति-पत्नी दोनों के कामकाजी होने, स्थानांतरण, प्रवास और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आकांक्षा के कारण पारिवारिक संबंधों का स्वरूप बदल रहा है।

आधुनिक उपन्यासों में पारिवारिक संबंधों की यह बदलती संरचना मानसिक एकांत के प्रमुख कारण के रूप में दिखाई देती है। परिवार व्यक्ति को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है, लेकिन जब परिवार के भीतर संवाद समाप्त होने लगता है, तब घर भी मानसिक एकांत का स्थान बन सकता है।

विशेष रूप से वृद्ध माता-पिता, अकेली स्त्रियाँ, कामकाजी दंपती और महानगरों में रहने वाले युवा इस समस्या से प्रभावित होते हैं। उपन्यासकारों ने इन पात्रों के माध्यम से यह दिखाया है

कि केवल एक छत के नीचे रहना ही पारिवारिक आत्मीयता का प्रमाण नहीं है।

प्रवास और महानगरीय अकेलापन

महानगरों में बड़ी संख्या में लोग शिक्षा और रोजगार के लिए दूसरे शहरों से आते हैं। प्रवासी व्यक्ति अपने परिवार, परिचित सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक जड़ों से दूर हो जाता है। नई जगह पर उसे अपनी पहचान और सामाजिक संबंधों को पुनः निर्मित करना पड़ता है।

यह स्थिति विशेष रूप से युवाओं और मध्यमवर्गीय व्यक्तियों में मानसिक एकांत की अनुभूति को जन्म दे सकती है। वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र होते हुए भी भावनात्मक रूप से अपने परिवार और मूल परिवेश से जुड़े रहते हैं। महानगर में उनका जीवन दो दुनियाओं के बीच विभाजित हो जाता है।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में प्रवासी पात्रों के माध्यम से इस विस्थापन और मानसिक द्वंद्व को अभिव्यक्ति मिली है। उनका अकेलापन केवल भौगोलिक दूरी का परिणाम नहीं है, बल्कि अपनी पहचान और आत्मीयता की खोज से भी संबंधित है।

समकालीन हिंदी उपन्यास की संवेदनात्मक भूमिका

आधुनिक हिंदी उपन्यास महानगरीय जीवन की समस्याओं को केवल दर्ज नहीं करते, बल्कि उनके पीछे छिपे मानवीय प्रश्नों को भी सामने लाते हैं। इन रचनाओं में मनुष्य की संवेदना, आत्मीयता और संबंधों की आवश्यकता को महत्त्व दिया गया है।

उपन्यासकार महानगर के विकास-विमर्श के समानांतर यह प्रश्न उपस्थित करते हैं कि विकास का अंतिम उद्देश्य क्या है? यदि आर्थिक प्रगति मनुष्य को अपने परिवार, संबंधों और स्वयं से दूर कर देती है, तो उस प्रगति की मानवीय सार्थकता पर विचार आवश्यक है।

इस दृष्टि से समकालीन हिंदी उपन्यास सामाजिक यथार्थ और मनोवैज्ञानिक यथार्थ के बीच सेतु का कार्य करते हैं। वे बाहरी महानगरीय संसार के साथ-साथ व्यक्ति के भीतर निर्मित महानगर को भी अभिव्यक्त करते हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक हिंदी उपन्यासों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महानगरीय जीवन और मानसिक एकांत का संबंध अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। महानगर आधुनिक मनुष्य को विकास, स्वतंत्रता, रोजगार और सुविधाओं के अनेक अवसर प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ ही वह व्यक्ति को प्रतिस्पर्धा, तनाव, संबंध-विच्छेद और भावनात्मक असुरक्षा से भी परिचित कराता है।

मानसिक एकांत केवल अकेले रहने की स्थिति नहीं है, बल्कि आत्मीय संवाद के अभाव की स्थिति है। महानगरीय जीवन में व्यक्ति हजारों लोगों के बीच रहते हुए भी स्वयं को अकेला महसूस कर सकता है। परिवार का विघटन, प्रवास, उपभोक्तावाद, व्यावसायिक दबाव, तकनीकी निर्भरता और संबंधों का बदलता स्वरूप इस अकेलेपन को और जटिल बनाते हैं।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों की विशेषता यह है कि वे महानगरीय जीवन के बाहरी वैभव के पीछे छिपे आंतरिक संकट को सामने लाते हैं। उनके पात्र आधुनिक मनुष्य की आकांक्षाओं, संघर्षों और असुरक्षाओं के प्रतिनिधि बन जाते हैं। विशेष रूप से स्त्री, युवा, प्रवासी और मध्यवर्गीय पात्रों के माध्यम से मानसिक एकांत के विविध रूपों को अभिव्यक्ति मिली है।

अंततः कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महानगर केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति का रूपक है। महानगर की भीड़ में बढ़ता अकेलापन आधुनिक सभ्यता के सबसे बड़े अंतर्विरोधों में से एक है। इन उपन्यासों का महत्त्व इस बात में है कि वे इस संकट को पहचानने के साथ-साथ मानवीय संवेदना, आत्मीय संवाद और संबंधों की पुनर्स्थापना की आवश्यकता की ओर भी संकेत करते हैं। इस प्रकार मानसिक एकांत का विमर्शआधुनिक हिंदी उपन्यास को आधुनिक जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक यथार्थ से जोड़ता है।

REFERENCES

1. वर्मा, निर्मल। *अंतिम अरण्य* । नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।

2. वर्मा, निर्मल। *वे दिन* । नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।

3. कालिया, ममता।*दौड़* । नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन । ● कालिया, ममता । *जीते जी इलाहाबाद* । नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन ।

4. श्री, गीतांजलि ।*माई* । नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन ।

5. श्री, गीतांजलि । *रेत समाधि* । नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन ।

6. सरावगी, अलका । *कलिकथा : वाया बाइपास* । नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन ।

7. वर्मा, रामचंद्र । *साहित्य के विविध आयाम*। नई दिल्ली: साहित्य भवन ।

8. अग्रवाल, नंददुलारे । *साहित्य और समाज* । नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन ।

9. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद । *समकालीन हिंदी साहित्य* । नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन

10. राजकमल प्रकाशन — समकालीन हिंदी उपन्यासों एवं लेखकों से संबंधित प्रकाशकीय सामग्री ।

11. वाणी प्रकाशन — समकालीन हिंदी साहित्य एवं उपन्यासों से संबंधित सामग्री ।